समकालीन हिन्दी नाटक और रंगमंच

डॉ. जयदेव तनेजा

Scanned by TapScanner

अनुक्रम

पृष्ठ

1. समकालीन हिन्दी नाटक 9

आषाढ़ का एक दिन/सगुन पंछी/करफ्यू/सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक/आठवाँ सर्ग/देवयानी का कहना है/तिलचट्टा तथा एक और अजनबी/लौटता हुआ दिन/एक मशीन जवानी की/एक से बढ़कर एक/शुतुरमुर्ग/बकरी/रस गंधर्व और बुलबुल सराय/एक सत्य हरिश्चन्द्र/यक्ष प्रश्न और उत्तर युद्ध/कथा एक कंस की/युद्धमन/एक और द्रोणाचार्य/अग्निलीक/हानूश/तीन एकान्त/काठ महल/मुआवज़े/कोर्ट मार्शल/हस्तिनापुर तथा अन्य कृतियाँ

2. हिन्दी एकांकी : एक ऐतिहासिक परिदृश्य 77

3. फिल्म और रंगमंच—एक 91

4. फिल्म और रंगमंच—दो 99

5. आम आदमी का नाटक और समान्तर रंगमंच 107

6. समकालीन हिन्दी रंगमंच—एक 117

7. समकालीन हिन्दी रंगमंच—दो 127

आधे-अधूरे/आठवाँ सर्ग/अन्धों का हाथी और मारीच संवाद/

Scanned by TapScanner

सबसे नीचे का आदमी/बुलबुल सराय/जुलूस/द फादर/बेगम का तकिया

8. रंग-साक्षात्कार **145**

(क) नाटककार लाल से संवाद : पूर्वाभ्यास से पटाक्षेप तक 147

(ख) रचनाकार की अनिवार्य नियति है अकेलापन
—सुरेन्द्र वर्मा 155

(ग) हिन्दी रंगमंच ही भारतीय और राष्ट्रीय रंगमंच है
—जे. पी. दास 158

(घ) रंगमंच और फिल्म का फर्क
—गिरीश कार्नाड 165

(ङ) राष्ट्रीय रंगमंच की भाषा हिन्दी ही होगी
—राजिन्दर नाथ 166

(च) रिचुअल थियेटर का पुनरुत्थान
—एम. के. रैना 169

(छ) दर्शकों को नहीं अपने आपको सुधारिए
—व्ही. राममूर्ति 172

परिशिष्ट **177**

नाट्यान्दोलन में समीक्षकों का योगदान : कुछ बुनियादी सवाल

Scanned by TapScanner